# व्यक्तित्व
# (Personality)

मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के अध्ययन में शुरू से काफी अभिरूचि दिखलायी है। Allport (1937) ने व्यक्तित्व की दी गयी सभी परिभाषाओं को एकत्रित कर पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत कर उनका विशेष अध्ययन किया।

Allport (1937) के अनुसार :- व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारिरिक तन्त्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते है।
(Personality is the dynamic organisation within the individual of those psychophysical systems that determine his unique adjustment to his environment.)

Eysenck (1952) के अनुसार :- व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।
(Personality is the more or less stable and enduring organisation of a person's character, temperament, intellect and physique that determine his unique adjustment to his enviornment.)

Baron (1993) के अनुसार :- व्यक्तियों के संवेगो, चिन्तनो तथा व्यवहारों के अनूठे एवं सापेक्ष रूप से स्थिर पैटर्न के रूप में व्यक्तित्व को परिभाषित किया जाता है।
(Personality is generally defined as individual's unique and relatively stable patterns of behaviour, thoughts and emotions.)

Scanned with OKEN Scanner

दून परिभाषाओं को संयुक्त विश्लेषण करने पर व्यक्तित्व का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जायेगा।

① मनोशारीरिक तन्त्र (Psychophysical System) – व्यक्तित्व एक ऐसा तन्त्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते हैं। यह तन्त्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आपस में अन्तक्रिया करते हैं। इस तन्त्र के मुख्य तत्व शीलगुण, संवेग, आदत, ज्ञानशक्ति, चित्तप्रकृति, चरित्र, अभिप्रेरक आदि हैं।

② गत्यात्मक संगठन (Dynamic Organisation) - गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र के विभिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत, चित्तप्रकृति आदि एक दूसरे से संबंधित होकर संगठित हैं। उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। व्यक्तित्व के तत्व आपस में इस तरह से संगठित होते हैं कि उनमें परिवर्तन भी होते रहते हैं।

③ संगतता (Consistency) – व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है। संगतता से मतलब होता है कि व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी एक समान होता है। व्यक्ति के व्यवहार में इसी संगतता के आधार पर उसमें अमुक शीलगुण (Trait) के होने का अनुमान लगाया जाता है।

④ वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण (Determination of unique adjustment to environment) — प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन पाया जाता है कि उसका व्यवहार वातावरण में अपने-अपने ढंग का अद्वितीय (unique) होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार, विचार, संवेग आदि अपूर्व होता है।

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणो का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने-अपने ढंग का अर्थात अपूर्व होता है।

## व्यक्तित्व के निर्धारक
## (Determinants of Personality)

मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के कारको को दो भागो मे बाटा है।

(1) जैविक कारक या आनुवंशिक कारक (Biological Factors)

(2) पर्यावरणी कारक (Enviornmental Factors)

1. जैविक कारक या आनुवंशिक कारक :- से तात्पर्य वैसे कारको से होता है जो आनुवंशिक (Hereditary) होते है जो जन्म या जन्म से पहले ही व्यक्ति मे मौजूद होते है और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते है। ऐसे कारक निम्नांकित है।

(A) शारीरिक संरचना (Physical Health)

(B) शरीर रसायन एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थिया (Body Chemistry)

(C) स्नायु मंडल (Nervous System)

2. - पर्यावरणी कारक (Enviornmental Factors) :-

व्यक्तित्व का विकास सिर्फ जैविक कारको द्वारा प्रभावित नही होता है। बल्कि वातावरण से सम्बन्धित कारको द्वारा भी प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिको ने पर्यावरणी कारकों को निम्नलिखित तीन भागो मे बांटा है।

Scanned with OKEN Scanner

1. सामाजिक कारक (Social Factors) →

(A) माता तथा पिता (Mother and Father)
(B) परिवार के सदस्यों का आपसी सम्बन्ध (Relationship among members of family)
(C) जन्म क्रम (Birth order)
(D) स्कूल का प्रभाव (School Influences)
(E) पास- पड़ोस (Neighbourhood)
(F) सामाजिक स्वीकृति (Social Acceptance)

2. सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors) – व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति का भी योगदान होता है। संस्कृति एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ समाज के रीति-रिवाज, आदतें, परम्पराओं, रहन-सहन तौर-तरीके से होता है। प्रत्येक समाज की एक विशेष संस्कृति होती है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न-किसी समाज में जन्म लेता है। अतः उस समाज की संस्कृति का उसके व्यवहार व व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है।

3. आर्थिक कारण (Economic Factors) :- आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से व्यक्तित्व के विकास तथा शीलगुणों के निर्माण पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है। Stagner (1935) ने अपने अध्ययन में पाया कि गरीब परिवार के बालों में हीनता का भाव, सांवेगिक अस्थिरता, शर्मीलापन तथा सामाजिक अगुआई (Social Initiative) की कमी आदि औसत परिवार के बालों की अपेक्षा अधिक देखी गयी।

Scanned with OKEN Scanner